BJM CARMEL ACADEMY
Best Compliments From
BJM CARMEL ACADEMY (CBSE)
CHANDRAPUR

जीवधारा
Vol. 4 : 2024-2025
बालकसंघ, चांदा धर्मप्रान्त

सुधारने और नई राहों पर चलने के लिए मौका देता है। बच्चों के लिए नया साल की अवसर पर नए सपने देखने और उन्हें पूरा करने की दिशा में कदम बढ़ाने का यह अवसर मिलता है। बच्चों के लिए यह समय होता है कि वे अपने नए लक्ष्यों को तय करें, जैसे बेहतर पढ़ाई करना, अच्छे दोस्त बनाना और नई चीज़ें सीखना। इस दिन बच्चों को यह सोचना चाहिए कि वे अपने परिवार, समाज और देश के लिए क्या अच्छा कर सकते हैं। नए सपनों को पंख देने के लिए नए साल का स्वागत हँसी और खुशी के साथ करना चाहिए।

तो बच्चों, इस नए साल में एक नया संकल्प लें, अपने माता–पिता, शिक्षकों और दोस्तों के साथ मिलकर कुछ अच्छा करें और इस दिन को यादगार बनाएँ। इस नए साल में अपने दिल में नए सपने और चेहरे पर मुस्कान लेकर आगे बढ़े और हमेशा याद रखे कि हर दिन एक नई शुरुआत है!

आप सभी को नव वर्ष की शुभकामनाएँ!

– फा. दिपक

मेरे प्यारे बच्चों,

बालक येशु के नाम पर,
आप सभी को जय येशू

जैसा कि हम क्रिसमस के इस आनंदमय मौसम का जश्न मनाते हैं और हम एक नए साल की ओर देखते हैं, आपके दिल में प्यार, आश्चर्य और आपके आस–पास की दुनिया जादू से भरी हों। क्रिसमस दयालुता साझा करने, परिवार और दोस्तों की गर्मजोशी को गले लगाने और इस दुनिया को इतना खास बनाने वाली अच्छाई पर विश्वास करने का समय है।

जैसे ही आप नए साल में कदम रखते हैं, याद रखें कि हर दिन नए सपनों, रोमांच और खुशी के क्षणों के लिए एक नया अवसर है। आपके पास अपनी मुस्कुराहट, अपनी हँसी और अपने खूबसूरत दिलों से दुनिया को उज्ज्वल बनाने की शक्ति है।

आपकी छुट्टियाँ खुशियों से भरी हों, और आने वाला साल आपके लिए वह सारा प्यार, हँसी और सपने लेकर आए जिसके आप हकदार हैं।

प्यार और आशीर्वाद के साथ,

फा. विवेक पुत्तनपुरयिल
निर्देशक, धर्मशिक्षा विभाग
चांदा धर्मप्रांत

क्रिसमस की तैयारी

एक अर्थपूर्ण तरीका

फा. ग्रिगरी

क्रिसमस के लिए अर्थपूर्ण तरीके से तैयारी करने के लिए हमें प्रभु यीशु के जन्म की कहानी को पढ़ना और समझना होता है, प्रार्थना करनी होती है, चर्च में भाग लेना होता है, दूसरों की सेवा करनी होती है, और क्रिसमस के वास्तविक सही अर्थ सिर्फ बाहरी उत्सव में नहीं, बल्कि आत्मा के आंतरिक परिवर्तन और यीशु के प्रेम को दुनिया में बाँटना है। जब हम प्रार्थना, सेवा और प्रेम को अपने जीवन का हिस्सा बनाते हैं, तभी हम क्रिसमस की तैयारी सही तरीके से कर पाते हैं।

क्रिसमस केवल एक त्यौहार नहीं है, बल्कि यह हमारे जीवन में ईश्वर का प्रेम और उनके उपहार, प्रभु यीशु मसीह के जन्म का स्मरण है। आज के व्यस्त जीवन में क्रिसमस की तैयारी अक्सर सजावट, खरीदारी और पार्टी तक सीमित हो जाती है। परंतु क्रिसमस की सही तैयारी हमारे आंतरिक जीवन को बदलने और ईश्वर के साथ गहरे संबंध बनाने का अवसर है। यहाँ कुछ सुझाव दिए गए हैं, जो हमें क्रिसमस को एक अर्थपूर्ण तरीके से मनाने में मदद कर सकते हैं।

१. आध्यात्मिक तैयारी पर ध्यान दें

प्रार्थना और ध्यान : हर दिन नियमित प्रार्थना करें और बाइबल पढ़ें, विशेषकर प्रभु यीशु के जन्म से संबंधित अंश।

आत्मा की शुद्धिः क्रिसमस से पहले अपने पापों का पश्चाताप कर पवित्र पापस्वीकार संस्कार मेल मिलाप करें। यह आत्मा को शुद्ध करता है और हमें ईश्वर के करीब लाता है।

नया सालः एक नई शुरुआत!

साल प्रत्येक वर्ष के अंत और नए वर्ष की शुरुआत का पर्व है। यह दिन पूरी दुनिया में उत्सव, खुशी, और नई उम्मीदों के साथ मनाया जाता है। विभिन्न संस्कृतियों, धर्मों और परंपराओं में इसे अलग–अलग तरीकों से मनाया जाता है। नया साल हम सभी के लिए एक ऐसा खास मौका होता है, जब हम नई उम्मीदों, सपनों और खुशियों के साथ अपने जीवन की नई शुरुआत करते हैं। यह एक ऐसा समय है, जब हम अपने पुराने साल को अलविदा कहते हैं और नए साल का स्वागत धूमधाम से करते हैं। बच्चों के लिए नया साल खासतौर पर एक नई ऊर्जा और उत्साह लेकर आता है।

नया साल केवल उत्सव मनाने का दिन नहीं है, बल्कि यह आत्मचिंतन और नई शुरुआत का अवसर है। हर साल, यह दिन हमें प्रेरणा देता है कि हम अपने जीवन में कुछ नया और सकारात्मक जोड़ें। चाहे पारंपरिक तरीके से हो या आधुनिक अंदाज में, नया साल का मुख्य उद्देश्य खुशी फैलाना और नई उम्मीदों का स्वागत करना है। नए साल का जश्न हर जगह अलग–अलग तरीकों से मनाया जाता है। बच्चे इस दिन अपने दोस्तों और परिवार के साथ मिलकर खूब मस्ती करते हैं। स्कूलों में नए साल के खास कार्यक्रम होते हैं, जहाँ बच्चे नाचते, गाते और अपनी प्रतिभा दिखाते हैं।

नया साल बच्चों को सिखाता है कि हर दिन एक नई शुरुआत है। इसे हँसी–खुशी और मेहनत के साथ बिताना चाहिए। बच्चे अपने जीवन में ईमानदारी, मेहनत और दया का पालन करना सीखना चाहिए। नया साल हमें पुरानी गलतियों को

रंग भरिएँ

एक से चार कक्षा तक के बच्चे कलर करके धर्मशिक्षण कार्यालय में 20 जनवरी के पहले जमा करे। विजेता को पुरस्कार दिया जाएगा।

एडवेंट कैंडल का उपयोग : एडवेंट के हर रविवार को एक कैंडल जलाएँ और उसके अर्थ पर मनन करें। यह प्रतीक है कि यीशु, जो दुनिया का प्रकाश है, हमारे जीवन में आ रहा हैं।

२. प्रेम और सेवा का अभ्यास करें

जरूरतमंदों की मदद करें : गरीबों, अनाथों और जरूरतमंदों के साथ अपना समय और संसाधन साझा करें। उनके लिए कपड़े, भोजन या उपहार देकर यीशु के प्रेम को उनके साथ बाँटें।

परिवार में सामंजस्य बढ़ाएँ : परिवार के सदस्यों के साथ अधिक समय बिताएं, एक साथ प्रार्थना करें और आपसी झगड़ों को भुलाकर प्रेम से रिश्ते मजबूत करें।

३. सजावट का सही अर्थ समझें

पवित्रता और सादगी : घर और चर्च की सजावट करते समय सादगी और आध्यात्मिकता को प्राथमिकता दें। क्रिसमस ट्री, क्रिब (गोशाला) और सितारा केवल बाहरी सजावट नहीं हैं; ये यीशु के जन्म की कहानी को याद करने के प्रतीक हैं।

क्रिब तैयार करें : अपने परिवार या कॅटेकिसम के दोस्तों के साथ मिलकर क्रिब बनाएँ। यह आपको यीशु के जन्म की परिस्थितियों को गहराई से समझने में मदद करेगा।

४. दूसरों के साथ खुशी बाँटें

गीत गाएँ : क्रिसमस कैरोल गाते हुए यीशु के जन्म का संदेश दूसरों तक पहुंचाएं।

कार्ड बनाएँ : अपने दोस्तों और परिवार के लिए हाथ से बनाए गए कार्ड भेजें। इससे आपके रिश्ते और मजबूत होंगे।

५. आंतरिक परिवर्तन का समय

ईश्वर को प्राथमिकता दें: क्रिसमस की खरीदारी और पार्टियों में समय गवाने के बजाय, अपने जीवन में ईश्वर के लिए स्थान बनाएं।

पाठों का अभ्यास करें: जो बातें प्रभु यीशु ने हमें सिखाई हैं, उन्हें अपने जीवन में अपनाने का संकल्प लें।

निष्कर्ष

क्रिसमस का सही अर्थ सिर्फ बाहरी उत्सव में नहीं, बल्कि आत्मा के आंतरिक परिवर्तन और यीशु के प्रेम को दुनिया में बाँटने में है। जब हम प्रार्थना, सेवा और प्रेम को अपने जीवन का हिस्सा बनाते हैं, तभी हम क्रिसमस की तैयारी सही मायने में कर पाते हैं।

आइए, इस क्रिसमस में, हम अपने दिलों को यीशु के लिए एक नई गोशाला बनाएँ, जहाँ उनका स्वागत हो सके। यही क्रिसमस की सबसे बड़ी और अर्थपूर्ण तैयारी होगी।

रास्ता खोजो

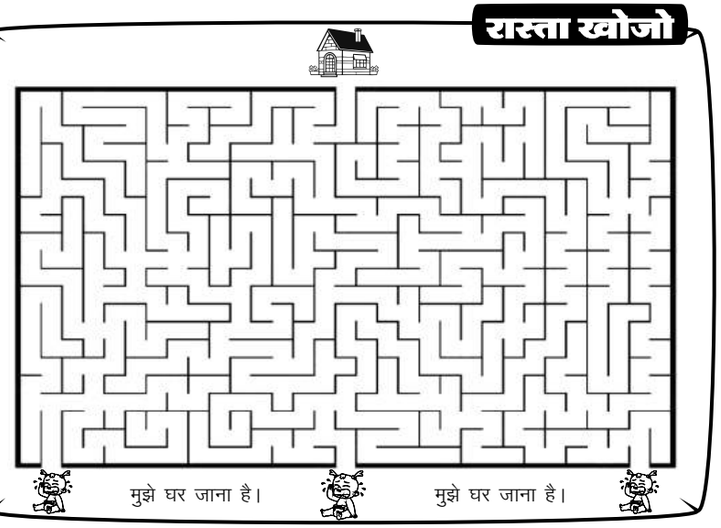

गाँधी बापू और नेहरू जी का शव रख कर अंतिम संस्कार के लिए ले जाया गया था। मदर टेरेसा की शव यात्रा को उतना ही आदर सम्मान दिया गया। मदर टेरेसा का शव देश के (झण्डे तिरंगे) झण्डे में लिपटा हुवा बढा जा रहा था।

उनकी कब्र को एक संगमवर के बडे पत्थर से ढाँक दिया गया। उनकी कब्र के पत्थर पर लिखा था '' जैसा मैंने तुमसे प्रेम किया वैसा तुम भी एक दूसरे से प्रेम करो'' (योहन 15:12)। मदर टेरेसा के लिए नारे लगाए गए ''मदर टेरेसा अमर रहें। ''सच है मदर टेरेसा देह रूप में हमारे साथ नहीं है परन्तु उनके किये हुए कार्य, उनके आदर्श उनका व्यवहार उनको सदा हमारे बीच में जीवित रखेगा। आकाश ने भी आँसू बहाकर मदर टेरेसा को अंतिम बिदाई दे दिया।

मदर टेरेसा के विभिन्न पुरस्कार

1962 में मदर टेरेसा को पद्श्री पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया।

1971 पोप जॉन XXIII शान्ति पुरस्कार

1972 जवाहर लाल नेहरू पुरस्कार (अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कार)

1979 नोवेल शान्ति पुरस्कार

1980 भारत रत्न

1992 भारत की सुपुत्री 'शीर्षक'

मदर टेरेसा को इसे ज्यादा अन्य पुरस्कार प्राप्त हुए है।

छोड़ गई और अनंत काल तक चमकने के लिए अपने देश स्वर्ग में पहुँच गई।

मदर टेरेसा की स्वर्गीय बुलाहट और पृथ्वी पर मरते हुओं को जीवन देने वाला जीवन हमको हमारी बुलाहट और सेवा के लिए चुनौती दे रहा हैं। 1989 से मदर टेरेसा की कठिन सेवा ने उसके शरीर को प्रेरित किया। उनको दिल का दौरा पडा। उनको पेस मेकर लगाया गया। 1997 में मदर टेरेसा के स्थान पर सिस्टर निर्मला को ''सुपीरियर जनरल चुना गया जो मदर टेरेसा अब अधिक समय अपनी पलंग पर ही रहती थीं क्योंकि उनका स्वास्थ बहुत खराब हो गया था। एक दिन अचानक उनके सीने में दर्द उठा और यही उनके जीवन का इस पृथ्वी पर अन्तिम दिन था। 5 सितम्बर 1997 को उनके प्राण पखेरू उड़ गए और कठिन परिश्रम के बाद अंतिम साँस ली।

मदर टेरेसा की मृत्यु के पश्चात उनका मृतक शरीर लोगो के दर्शन के लिए 5 सितम्बर से 13 सितम्बर तक कलकत्ता के 155 साल पुराने गिरजा घर (**St Thomas Church**) में शीशे के अन्दर रखा गया ताकि सब सरलता से उन्हें अपनी श्रद्धांजली अर्पित कर सकें। जितने भी दिन तक उनका मृत शरीर गिरजा घर में रखा गया था टी. वी पर बार–बार दिखाया गया कि कितनी भीड उनके अंतिम दर्शन के लिए आ जा रही थी। यहाँ के स्कूल के बच्चे भी लंबी लाईन लगाए अपनी बारी के लिए दर्शन करने को ठहरे थे। और आँसू बहा–बहा कर माता के अंतिम दर्शन कर रहे थे।

13 सितम्बर 1997 सुबह 8:45 बजे मदर टेरेसा का शव (**St. Thomas Church**) घर से सैनिक अफिसरों द्वारा बाक्स में रखकर उठाया गया और वही पुरानी तोप गाडी में रखा गया जिसमें

सच्चाई की जीत

एक समय की बात हैं, एक धर्मात्मा राजा ने अपने राज्य में एक अनोखी चुनौती रखी। उन्होंने घोषणा की जो कोई भी सच्चाई के साथ पुरा जीवन जीता होगा, उसे अपार धन और सम्मान के साथ पूरा जीवन जीता होगा, उसे अपार धन और सम्मान से नवाजा जाएगा। इस घोषणा से पूरे राज्य में हलचल मच गई। हर कोई इस इनाम पाने के लिए उत्सुक था। उसी राज्य में एक गरीब लेकिन ईमानदार किसान रहता था। उसने अपने जीवन के हर कदम पर सच्चाई को अपनाया था। चाहे वह उसके खेती का काम हो या उसके पड़ोसियों के साथ उसका व्यवहार, वह हमेशा सच्चाई के मार्ग पर चलता रहा।

एक दिन किसान ने सोचा कि वह भी राजा की चुनौती का हिस्सा बनेगा। वह राजा के दरबार में गया और अपनी सादगी और ईमानदारी की कहानियाँ सुनाई। उसने बताया कैसे उसने अपने खेत में सोने की मुद्राएँ पाई थी, परंतु उसने उन्हें उसके असली मालिक को लौटा दिया। कैसे उसने अपने पड़ोसी की भूलवश भेजी गई अनाज की बोरी उसे वापस कर दी थी।

राजा उसकी कहानियों से प्रभावित हुए। उन्होंने महसूस किया कि किसान ने न केवल शब्दों में, बल्कि कर्मों में भी सच्चाई को अपनाया था। राजा ने उसे इनाम के रूप में सोने के सिक्के, नई भुमि और राज्य में सम्मानित स्थान दिया और आश्वासन दिया कि उसकी सच्चाई और ईमानदारी का राज्य भर में गुणगान किया

जाएगा। इस घटना से प्रेरित होकर, अन्य लोगों ने भी सच्चाई के मार्ग को अपनाने का संकल्प लिया।

यह घटना पूरे राज्य में सच्चाई और ईमानदारी के महत्व को उजागर करने वाली बन गई। लोगों ने समझा कि भले ही सच्चाई का मार्ग कठिन हो परंतु उसके परिणाम हमेशा शुभ और संतोषजनक होते है।

सच्चाई हमेशा जीतती है। यह कहानी हमें यह सिखाती है कि सच्चाई का मार्ग चुनना हमेशा फलदायी होता है और अंत में यही जीत की कुंजी होती है।

जीवन में 3 प्रकार के लोग

आपके जीवन में 3 प्रकार के लोग, पत्ते जैसे लोक, ये सिर्फ एक मौसम के लिए आपके जीवन में आते हैं। आप उन पर निर्भर नहीं रह सकते, वे कमज़ोर हैं। वे केवल वही लेने आते हैं जो उन्हें चाहिए, फिर चले जाते हैं। शाखा जैसे लोग वे मजबूत होते हैं, लेकिन जब जीवन कठिन हो जाता है तो वे अलग हो जाते हैं। वे एक मौसम रहेंगे, लेकिन जब जीवन कठिन हो जाएगा तो चले जाएँगे। जड़ जैसे लोग ये बहुत महत्वपूर्ण लोग हैं, ये दिखाने के लिए काम नहीं करते हैं। वे कठिन समय में टिके रहते हैं, वे आपको पानी देंगे, वे आपकी स्थिति से प्रभावित नहीं होते हैं, जैसे आप हो वैसे ही आपको स्वीकार करते है। केवल जड़ प्रकार के लोग ही रहेंगे, चाहे कोई भी मौसम हो।

सचमुच बहुत ही कमजोर और छोटे बच्चे थे उनके मुँह, सिर हाथ और पैर बहूत ही छोटे और कमजोर थे परंतु वहाँ की सेविकाएँ उन्हें जिंदगी के प्रयास में लगी हुई थी। अपाहिज और बेसहारा बच्चों को अपने शिशु भवन में लाने से मदर टेरेसा कभी इन्कार नही करती थीं।

मदर टेरेसा स्वयं एक रोमन कॅथलिक विश्वास की महिला थीं। उनके धर्म को किसी सीमा में बाँधा नही जा सकता। वह सब धर्म के लोगों के पास पहुँची तथा सब जरूरतमन्द लोगों को सेवा दिया। यद्यपि उन पर कुछ बातों का आरोप भी लगाया गया किन्तु उनकी निःस्वार्थ सेवा ने सब पर पर्दा डाल दिया। यहाँ तक कि हमारे हिन्दु भाई बहन उनकी सेवा से बहुत प्रभावित थे और आरोप की बातो को सोच ही नही सकते थे वे देखते थे कि मदर टेरेसा सेवा में प्रयास करके मरते हुओं को जीवन दे रही हैं।

03 अक्टूबर 1997 की फ्रन्ट लाईन मैगजीन में मदर का पेज 14 पर बनी एक तस्वीर में एक दुबले पतले बुजुर्ग आदमी से उसके सिर पर हाथ रख कर बात करते हुए दिखाया गया। उस तस्वीर को देखकर, ऐसा प्रतीत होता है कि मदर टेरेसा किसी में भेदभाव नही रखती थी। मदर टेरेसा पर यह भी आरोप रहा कि इतनी प्रभावशाली व्यक्तित्व होने के बावजूद भी उन्होंने गरीबों की सेवा और इलाज के लिए बहुत उच्च स्तर के साधन का प्रयोग नही किया। क्या 'प्रेम' से बढकर कोई सेवा है?

अपने जीवन के 87 साल में लगभग 50 साल दूसरों की सेवा में लगा दिया। बहुतों के बुझते दीप को जला दिया–निराशा में आशा दिला दिया अन्धेर में ज्योति चमका दी। और अपने जीवन के लिए

1952 में मदर टेरेसा ने ''निर्मल ह्रदय'' नाम का पहला सेवा केन्द्र आरंभ किया। जो कार्य प्रार्थना और लगन से आरंभ किया वही काम आज लगभग 120 देशों में संस्थारूप में कार्य हो रहा है और उनमें लगभग 9,000 कार्यकर्त्ता हैं।

सबसे प्रमुख बात जो मैने उस होम में देखी वह यह थी कि एक तरफ माँ मरियम की तस्वीर लगी थी, वेदी सी बनी हुई थी। मदर टेरेसा एक सीधी–साधी नम्र स्वभाव की महिला थी उनका जीवन बहुत ही साधारण था। वह ''साधा जीवन उच्च विचार की महिला थी।'' सचमुच में बाइबल की शिक्षा उनमें कुट–कुट कर भरी थी।

मदर टेरेसा को कई बार सड़को पर और टी.वी पर नंगे पैर कलकत्ता की सड़को पर तेजी से चलते हुए देखी गई। ऐसा प्रतीत होता था। कि वह अपना कोई भी समय व्यर्थ नही होने देती थीं। कहीं ऐसा न हो कि जो उन्हें करना था वह उनकी दृष्टि से ओझल न हो जाए।

भजन 127:1 के अनुसार मदर टेरेसा का सम्पूर्ण भरोसा परमेश्वर पर था। घर का बनाने वाला परमेश्वर है यदि वह घर को न बनाए तो मनुष्य का परिश्रम व्यर्थ होगा। '' उनका भरोसा था कि जो काम उन्होंने आरंभ किया है वह परमेश्वर का काम है वही उसको पूरा भी करेगा।''

उस स्थान का नाम 'होम फॉर डाईंग एण्ड डैस्टीट्यूट' रखा गया और उस स्थान के सामने बोर्ड पर ''निर्मल ह्रदय'' लिखा गया। किसी–किसी बच्चो के पास दो–दो हीटर भी लगे हुए थे पूछने पर मालूम हुआ कि ये बच्चे बहुत दुर्बल और शायद समय से पूर्व जन्में बच्चे है जिन्हे गर्म रखने की आवश्यकता है। मैंने देखा

दादाजी का जन्मदिन

यह परिवार ईश्वर को जानने वाला तथा प्रार्थनामय जीवन बिताते है। यह परिवार सब मिलजुकर रहते है एक दिन अपने मन यह सोचते है कि हम दादाजी का जन्म दिन बडे धुमधाम से मनाना चाहिए सब लोग हामी भर देते है और दादाजी के जन्म की तैयारी में लग जाते है और सोचते की किस प्रकार करना चाहिए और कैसा मनायेगे कि वह एक यादगार बन जाए। फिर वह लोग अपने काम बाँटते है।

सब लोग अपनी अपनी जिम्मेदारी ले लेते है और सब लोग अपने काम में जुट जाते है और दादाजी बुजुर्ग होने की वजह से उन्हें एक कमरे में रहने की व्यवस्था करते है और सब लोग अपने काम जुट जाते है। हम घर को किस तरह सजायेगे, घर में क्या क्या करना है, और क्या–क्या खाना बनाना है। कितने लोगो को आमंत्रण करना, और हम किन मेहमानो को बुलाने इन्हीं कार्यो में सभी व्यस्त हो जाते है, पर यह भुल जाते कि जिसका जन्म दिन मनाने वाले है उसे ही याद नही रखते है उनके तरफ कोई ध्यान भी नही देते और अपने कामों में व्यस्त हो जाते है पर दादाजी बार–बार सबको बुलाते पुकारते रहते है पर कोई उनके तरफ ध्यान नही देतें, पर बच्चे बोलते है क्या दादाजी आप देख रहे हो ना हम काम में कितने व्यस्त है, और हम सब जन आपके जन्मदिन की तैयारी कर रहे है। हमें बहुत काम आप चुपचाप रहिए हमे अपना काम करने दिजीए अगर हम आपके साथ बाते करते रहने से हमारा काम कैसा पुरा होगा और हमारा वक्त मत जाया किजीए दादाजी आप शांत रहिए और हमे अपना काम करने दिजीए, और ऐसा कहकर

सब लोग अपने काम में लग जाते और दादाजी के तरफ नजर अंदाज करते है।

दादाजी बार–बार पुकारते है और कहते है मुझे प्यास लगी है मुझे थोडा पानी दे दो पर कोई ध्यान नही देता। ऐसे ही सब अपने काम में जुट जाते है फिर एक बार दादाजी आवाज लगाते है पर उनके तरफ कोई ध्यान नही देता दादाजी चिल्लाते–चिल्लाते चुप हो जाते है फिर भी उनके और कोई ध्यान नही देता। सब लोग आपस में बातचीत करने लग जाते बहुत समय के बाद दादाजी कहते है की मेरा जन्मदिन मनाने के तैयारी से लगे हो पर अब मेरे तरफ ध्यान नही दे रहे, ना मुझे कुछ खाने–पिने दे रहे हो तो तुम अपने काम करते रहोगे तो क्या लाभ होगा इसी तरह सभी लोग दादाजी के तरफ नजर अंदाज करते है और उसी वक्त दादाजी की तबीयत खराब हो जाती है और दादाजी कहराते कहराते अपना प्राण छोड देते हैं यह देखकर सब लोग अपना काम छोडकर उनके पास दौड आते है और फिर मन नही मन में पछताते है यह हमने यह क्या किया हैं जिसका जन्म दिन मनाने चक्कर में हम उन्हीं की ओर ध्यान नही दिए और उनके पुकार को हम नजर अंदाज किए हमे प्यार से पुकारते रहे पर हम उनका कदर नही किया। पछताप के साथ सबके सब रोने लगते है हमे माफ कर दिजीए दादाजी। (सिसकियाँ सिसकियाँ लेते हुए पछताप और क्षमा याचना करते है)

कहानी की सिख

कही बार हम भी अपने जीवन ऐसा ही कुछ कर जाते हम दुनिया की रीती रिवाजों, सजावट, अपने आपकी तैयारी में मग्न हो जाते यह याद नही रखते है हम किस लिए तैयारी कर रहे है। ऐसे ही हम भी ख्रिसमस की तैयारी करते है। ईसा का जन्म दिन मनाते है पर दुनियादारी कि तरह सभी सजावटो के तरफ ध्यान देते हैं पर हम अपने दिलो की तैयारी नही करते है हम अपने जीवन में ईश्वर प्रथम स्थान या पछताप के साथ ईश्वर के अनुग्रह को नही पाते, ईसा

संत मदर तेरेसा

येसु मसीह का प्रतीक शान्ति दूत

मनुष्य जो परमेश्वर की समानता में बनाया गया था, बिगड गया और उस पर दुःख पीड़ा, वेदना, कलह, ईर्ष्या, बीमारी, अपाहिज हो जाना, अनाथपन, तिरस्कृत स्थित ने अपना राज्य फैला लिया। पर किसी को क्या मालुम था कि इसी कीचड़ व दलदल में से एक कमल का फल खिलेगा जो स्वयं का त्याग करके शान्ति दूत बन जाएगा और वह भी एक साधारण 'महिला' एक मदर टेरेसा (भारत माता)।

मदर टेरेसा जिनका बचपन का नाम ऐग्नेस था। उनका जन्म 26 अगस्त 1910 में यूगोस्लाविया के एक छोटे नगर में हुआ था। वह साधारण व्यवसाई परिवार की कन्या थीं। तीन बहनों में सबसे छोटी बेटी थी। जब वह 7 वर्ष की थीं तो उनके पिता की मृत्यु हो गई थी। बचपन से उन्होंने अपनी माता जी को कठिन परिश्रम करके परिवार को पालते देखा था। इनमें माता धार्मिक प्रवृत्ति की महिला थीं जो सत्य और ईश्वर भक्ति में लगी रहती थी। इनके जीवन का प्रभाव ऐग्नेस के जीवन पर अमिट छाप छोड़ गया। कौन जानता था कि यही ऐग्नेस मदर टेरेसा बनकर बेसहारों को सहारा देगी, तिरस्कृतों/अनाथों की माँ बन जाएगी और वह भी हमारे भारत जैसे देश में आकर शान्ति दूत का कार्य करके बहुतों के हृदय पर अमिट छाप छोडकर लोगों को रोता छोडकर चिरस्मरणीय बन जाएगी।

बचपन ही से उनके हृदय में दूसरों की सेवा करने की भावना जागृत हो रही थी जब वह 12 वर्ष की थी उसी समय से उन्होंने संकल्प किया था कि वह विवाह नही करेगी परन्तु एक 'नन' बनकर दूसरों की सेवा करेगी।

मसीह कहते है, अपने पडोसी तथा भाई बहनों प्यार करो, साथ ही साथ आध्यात्मीक जीवन के साथ हम अगर खिसमस मनाते है। तब ही हमारे जीवन को सही मायने से हमने आपने परिवार में ईसा का जन्म दिन मनाया जा सकता है।

इसायाह अध्याय - 5 ते 10

1. अँधकार में क्या दिखाई देगा, और प्रकाश के घने बादलो का क्या किया जायेगा?
2. एफ्रईम से कौन अलग हुआ था और वहा किसे भेजा?
3. सियोन के पर्वत पर निवास करने वाले किसके चिह्न और प्रतीक है?
4. अँधकार में भटकने वाले लोगों कौनसी ज्योति दिखाई पडी?
5. सैनिको ने क्या क्या जला दिए?
6. राजा उज्जीया के देहान्त के बाद कौन सिंहासन पर बैठा और मंदीर का फर्श कैसे ढका रहा?
7. इसायाह के पुत्र का नाम क्या था?
8. किन–किन राज्य में सबसे अधिक देवमुर्तिया बनाई गई?
9. संहिता और साक्ष्य के बारे में नही बोलेगे तो किसका उदय नही होगा?
10. तारपीन और बलूत के कट जाने पर क्या रह जाता है और उसे कैसी प्रजा उत्पन्न होगी?

(इसायाह नबी के ग्रन्थ 5–10 तक पढीयें और उत्तर लिखकर धर्मशिक्षण कार्यालय में 20 जनवरी के पहले भेजीये। विजेता को पुरस्कार दिया जाएगा।)

अपनी दैनंदिनी में फौस्टीना ने अपने अनुभव के बारे में इस प्रकार लिखा, पल भर के लिए में चैप्पल (Chapel) में घुसी तो प्रभु ने मुझसे कहा, मरणासन्न एक रोगी को बचाने के लिए मदद करें। मेरी पढाई करूणा की जपमाला उसके लिए रटें।

बिलकुल विनम्र के साथ, अपने कोंग्रिगेशन जो उसकी परवरिश करती थी, से छोटे–छोटे पापों के प्रति भी क्षमा याचना करते हुए, स्वर्ग ओर अपने को ले जाने आते ईसा की प्रतिक्षा में वे बोले, स्वर्गस्थ पिता के साथ जीना, यही मेरा जीवन लक्ष्य है। 1938 अक्टूबर 5 वी को 33 वें साल की उम्र में मरिया फौस्टीना का निधन हो गया। पोप जॉन पॉल द्वितीय ने पोप जूबिल वर्ष सन् 2000 अप्रेल 30. वीं को पोलैण्ड वाली फौस्टीना को सन्त घोषित किया।

सन्त मरिया फौस्टीना कोवाल्स्क

के जीवन के मुख्य कार्य

1. ईश्वर की करूणा का स्वभाव दुनिया के प्रति उद्घटित किया।
2. अपने कन्धे पर रखे हर काम को ईश्वरीय महत्व के प्रति करती रही।
3. ईसा के दुःख– भोगों के साथ अपने दुःखों को जोड कर पुरोहितो संतसन्यासों और कलीसिया के विकास के लिए निरन्तर प्रार्थना करती थी।
4. दुनिया भर पर करूणा हो, यह प्रार्थना सदा रटती थी।

सन्त फौस्टीना कोवालस्क

स्वर्गीय करूणा की मध्यस्था नाम से सन्त मरिया फौस्टीना कोवाल्का जानी जाती है। करूणा मुर्ति ईसा को आधूनिक कोवाल्का जानी जाती है। करूणा मुर्ति ईसा को आधुनिक दुनिया के सामने पेश किया, यह है सन्त मरिया फौस्टीना की खास देन।

पोलैण्ड के ग्लोगोवीक में 1905 अगस्त 25 को मरिया जन्म हुआ। बपतिस्मा का नाम रहा हेलना। वह एक गरीब परिवार की दस सन्तानों में एक थी। 14 वे साल की उम्र तक अपने माँ–बाप–स्तनिस्लावुस और मरिया की सेवा करते हुए वह घर में ही रही। ईसा की सेवा के लिए मुझे बुलाया गया है, उसे लगा, किन्तु माता–पिता उसकी इच्छा के खिलाफ थे। आखिर परेशान होकर उसने अपनी चाहत छोड दी। गाँव के पर्व के वक्त फौस्टीना ने नाच के बीच ईसा के गूँजते स्वर को सुना। उस रात के दर्द मुखवाले ईसा के दर्शन मिले।

सन्यासिनी बनने लायक शिक्षा उसे नही मिली थी, इसलिए मठ की सेवा–बहन हो कर उसे चुन लिया। 1925 अगस्त 1, को वारसो स्थित करूणा माता के नाम वाले कोंग्रिगेशन की सदस्या बन गई। एक मामूली सदस्या रसोई के काम, बाग के काम, पहरेदारी आदि करते हुए मरिया फौस्टीना जीवन बिताती रही।

ईश्वरीय कृपा से 1926 अप्रेल 30 को वह नोविश्यट में शामिल हुई और मरिया फौस्टीना नाम स्वीकारा 1931 फरवरी 22 वीं. को खास दर्शन देकर ईसा ने उसे अपनी दौत्यवाहिका बनाई। खास प्रकाशना से ईसा के दर्शन उसे मिले। उन्होंने ईसा के दर्शन के बारे में अपनी दैनंदिन में लिखा। ईसा–करूणा पर भरोसा रखने और उसे दूसरों को देने के लिए वे परिश्रम करती रहीं। अपने को मिले दर्शन को जीवन में अमल में लाने का उपदेश भी वे देती रही।

ईश्वरीय करूणा का स्वभाव दुनिया को विदित करना, यह रहा मरिया फौस्टीना का मुख्य काम। मैं करूणामुर्ति ईश्वर हूँ, फौस्टीना ने ऐसे सन्देश अपनी दैनंदिनी में लिखे। सालों के बाद कलीसिया ने इन्ही सन्देशों को मान्यता दी। करूणा की जपमाला रट कर दुनिया इस प्रार्थना को स्वीकार चुकी हैं। हमसे और पूरी दुनिया से आप की करूणा हो, यही है प्रार्थना।

ईमानदार सन्देशवाहिका होकर जीती रही फौस्टीना को 1931 में एक ईश्वर दर्शन मिले, जिसमें करूणा का चित्र खींचनें का उपदेश मिला था। वे मन में जो कुछ देखती है उस के अनुसार चित्र खींचने का उपदेश मिला था। वे मन में जो कुछ देखती है उस के अनुसार चित्र खींचने के लिए दर्शन मिले थे। छोटे–छोटे काम करते वक्त उन्हे यह दर्शन मिले। उस दर्शन में मिले दो रूप थे – हृदय से सफेद और लाल रंग वाले घोडों का प्रवाह हो रहा था। ईसा का आदेश पाकर उन्होंने चित्र खींचा। सालों तक इस चित्र का पता किसी को न मिला। चित्र में यह भी लिखा था कि ईसा! मैं आप पर आश्रय रखती हूँ। दूनिया भर में सबसे ज्यादा पूजित चित्र होकर वह जाना जाता है।

फेफडे संबन्धी रोग से मरिया फौस्टीना परेशान हुई। अपने को हुए रोग और दर्द तथा निन्दायें ईसा के दुःख भोग के साथ वे समर्पण करती थीं। अपने को मिले दर्शनों के नाम पर भी उन्हें कई व्यक्तियों की निंदा सुननी पडी। प्रकाशनाओं के नाम पर कुछ व्यक्ति उन पर शंका करती थी, आलोचना और यंत्रणाओं की भी शिकार होनी पडी। फिर भी अपने अंतकरण की आवाज और मठाधिपा तथा प्रभु की इच्छाओं के अनुसार दर्द सहते हुए वे जीवन बिताती रहीं।

पुरोहितों की विशुद्वि, कलीसिया की जरूरतों और विकास तथा दुनिया भर की भलाई के लिए अपने जीवन की समर्पण किया पुरोहितों, कलीसिया और दुनिया भर के लिए वे निरंतर प्रार्थना करती थी।